नाम :- वैरागर काजोल किशोर

वर्ग :- MA-I Hindi

कॉलेज नाम :- कला, वाणिज्य विज्ञान
महाविद्यालय सोनई.

विषय :-

शनिशिंगणापुर में आनेवाले भक्तों को हिंदी बोलने में आनेवाली समस्या।

:- मार्गदर्शक :-

डॉ. एस. बी. चौधारे

एस. देशमुख

अनुक्रमणिका

क्र.नं	विषय	पृष्ठ	सही
1)	श्री शनैश्वर देवस्थान शनिशिंगणापुर		
2)	शनिदेव का धाम - शनि शिंगणापुर		
3)	शनिशिंगणापुर मंदिर की कहानी		
4)	शनिशिंगणापुर 400 साल पुरानी परंपरा टूटी		
5)	दक्षिण में हो रहा है हिन्दी का विस्तार		
6)	शनिशिंगणापुर में आने वाले लोगों को हिन्दी बोलने में आने वाली समस्या		

Scanned by TapScanner

प्रस्तावना

शनि शिंगणापुर स्थित मंदिर ४०० साल पुराना है व उस मंदिर का भी इतिहास बहुत अनोखा है। शनिशिंगणापुर मे कोई भी व्यक्ती अपने घरो या दुकानो पर दरवाजा नहीं लगाता है क्योंकि उनकी यह मान्यता है कि शनि भगवान उनकी रक्षा करेंगे। इनकी इसी श्रद्धा ने एक समय में उन्हें पूरी दुनिया में फेमस किया था और देखते ही देखते शनिशिंगणापुर को बहुत सारे लोग अन्य राज्यों से दर्शन लेने के लिए आने लगे। शनिदेव की पूजा करने का अधिकार सिर्फ पुरुषों को ही था मात्र महिलाओं ने आंदोलन करके शनिदेव कि पूजा करने का अधिकार प्राप्त कर लिया।

शनिशिंगणापुर में आने वाले बहुत से राज्यों से जो लोग आते है उन्हे यहाँ के कमिशन एजंट द्वारा फसाया जाता है। पर अब यह फसावूपण अब बहुत कम हो गया है। क्योंकि शनिशिंगणापुर ट्रस्ट सरकार की हो गई है। इससे भक्तो की समस्या कम हो गई है।

शनिशिंगणापुर की वजह से बहुत से गरीब लोगों की रोटी का सवाल मिट गया है उन्हे रोजी रोटी मिल रही है। मंदिर की वजह से ऑटो रिक्शा वालों का व्यवसाय अच्छे से हो रहा है। यही है शनिदेव की महीमा।

Scanned by TapScanner

श्री शनेश्वर देवस्थान शनि शिंगणापुर

अहमदनगर व जिले के नेवासे तहसील स्थित श्री शनेश्वर देवस्थान शनि शिंगणापुर अहमदनगर - औरंगाबाद राज्य मार्ग क्रमांक 60 पर घोडेगाँव से 5 कि.मी दूरी पर बसा हुआ है। जागृत श्री शनेश्वर देव की ख्याति सूर्यपुत्र शनि देव के कारण शनि शिंगणापुर गाँव में चोरी नहीं होती तथा किसी भी गाँव में खिड़की दरवाजा अथवा ताला नहीं लगाया जाता। गाँववालों की मान्यता है कि अगर कोई चोरी करता है तो वह अँधा बन जाता है। चोर कभी गाँव की हद पार नहीं कर सकता। इसी तरह गुलशन कुमार की फिल्म सूर्यपुत्र शनि देव व प्रख्यात गायिका अनुराधा पौडवाल के भजनों के कारण शनि शिंगणापुर की लोकप्रियता बढ गई है। यहाँ पूरे भारत एवं विदेशों से असंख्य शनि भक्तों की भीड़ दर्शन के लिए लगी रहती है। जातक के अस्थिर जीवन में हर कोई परेशान रहता है। मनःशांति और साढेसाती ग्रह पीडा से छुटकारा पाने के लिए शनि भक्त शनि शिंगणापुर अवश्य पधारते है। शनि भक्तों में अनेक फिल्म कलाकार, राजनेता गण शामिल है। देवता है लेकिन मंदिर नहीं, वृक्ष है पर छाया नहीं, भय है पर शत्रु नही। वैशाख वद्य चतुर्दशी के अमावस के दिन शनि जयंती मनाई जाती है। पाँच दिनों तक यत्र

Scanned by TapScanner

और सात दिनों तक भजन, प्रवचन, कीर्तन आदि धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है भक्तों के ठहरने के लिए भव्य भक्त निवास एवं एक साथ हजारों भक्तों के भोजन के लिए भव्य प्रसादालय बनाया है। ट्रस्ट ने गोशाला, प्रसादालय, भक्त निवास, रास्तों का विकास, जलपतान, स्कूल आदि अनेक विकास कार्य पूर्ण किए है।

ओम निलांजनम समाभासम् । रवि पुत्रम् निलांजन
छाया मार्तंडसम्भुतम् । तम नमामि शनैश्चरम् ॥

Scanned by TapScanner

शनिदेव का धाम - शनि शिंगणापुर

देश में सूर्यपुत्र शनिदेव के कई मंदिर हैं। उन्हीं में से एक प्रमुख है महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित शिंगणापुर का शनि मंदिर विश्व प्रसिद्ध इस शनि मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ स्थित शनिदेव की पाषाण प्रतिमा बगैर किसी छत्र या गुंबद के खुले आसमान के नीचे एक संगमरमर के चबूतरे पर विराजित है।

शिंगणापुर के इस चमत्कारी शनि मंदिर में स्थित शनिदेव की प्रतिमा लगभग पाँच फीट नौ इंच ऊँची व लगभग एक फीट छह इंच चौड़ी है। देश विदेश से श्रद्धालु यहाँ आकर शनिदेव की इस दुर्लभ प्रतिमा का दर्शन लाभ लेते है यहाँ के मंदिर में स्त्रियों का शनि प्रतिमा के पास जाना वर्जित है। महिलाएँ दूर से ही शनिदेव के दर्शन करती हैं।

सुबह हो या शाम, सर्दी हो या शाम, सर्दी हो या गर्मी यहाँ स्थित शनि प्रतिमा के समीप जाने के लिए पुरुषों का स्नान कर पीताम्बर धोती धारण करना अत्यावश्यक है। ऐसा किए बगैर पुरुष शनि प्रतिमा का स्पर्श नहीं कर सकते हैं। इस हेतु यहाँ पर स्नान और वस्त्रादि की बेहतर व्यवस्थाएँ हैं।

खुले मैदान में एक टंकी में कई सारे नल लगे हुए हैं, जिनके

जल से स्नान करके पुरुष शनिदेव के दर्शनों का लाभ ले सकते है। पूजनादि की सामग्री के लिए भी यहाँ आसपास बहुत सारी दुकानें जहाँ से आप पूजन सामग्री लेकर शनिदेव को अर्पित कर सकते है।

यदि आप पहली बार शनिशिंगणापुर जा रहे हैं तो यहाँ भक्तों की श्रद्धा व विश्वास का नजारा देखकर आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे। केवल बड़े बुजुर्ग ही नहीं अपितु तीन चार वर्ष के बालक भी इस शीतल जल से स्नान कर शनिदेव के दर्शन के लिए अपने पिता के साथ चल पड़ते हैं। शनि मंदिर में दर्शन करने वाला हर पुरुष श्रद्धालु आपको यहाँ पीताम्बरधारी ही नजर आएगा।

शनि मंदिर का एक विशाल प्रांगण है जहाँ दर्शन के लिए भक्तों की कतारें लगती हैं। मंदीर प्रशासनों द्वारा शनिदेव के दर्शनों की बेहतर व्यवस्थाएं की गई हैं, जिससे भक्तों को यहाँ दर्शन के लिए धक्का मुक्की जैसी किसी भी स्थिती का सामना नहीं करना पड़ता है। ~~सब~~ जब आप यहाँ स्थित विशाल शनी प्रतिमा के दर्शन करेंगे तो आप स्वयं सूर्यपुत्र शनिदेव की भक्ती में रम जाएंगे। प्रत्येक शनिवार, शनि जयंती व शनैश्चरी अमावस्या आदि अवसरों पर यहाँ भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है।

Scanned by TapScanner

शनि शिंगणापूर मंदिर की कहानी

आपको शायद यकीन न हो लेकिन इस गांव के किसी भी घर या दुकान में दरवाजा नहीं हैं। कहते हैं कि बिते कुछ दिनों मे यह गांव अपनी इसी खासियत से देश दुनिया में काफी मशहुर हुआ था।

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित है शिंगणापुर गांव शनि शिंगणापुर के नाम से जाना जाता है। यह गांव हिन्दू धर्म के विख्यात शनि देव की वजह से प्रसिद्ध है, क्योंकि इस गाँव में शनि देव का चमत्कारी मंदिर स्थित है। आपको शायद यकीन न हो लेकिन इस गांव के किसी भी घर या दरवाजे वाले दुकान नहीं हैं। कहते हैं कि बीते कुछ समय में यह गाँव अपनी इसी खासियत से देश-दुनिया में काफी मशहुर हुआ था। लेकिन यहाँ दरवाजा क्यों नहीं प्रयोग किया जाता? चलिए अब आपको शिंगणापुर मंदिर की कहानी बताते हैं जिसके चलते शिंगणापुर गांव में शनि देव की इतनी महिमा बढ गई।

कहते हैं एक बार इस गाँव में काफी बाढ आ गई, पानी इतना बढ गया कि सब डुबने लगे। लोगों का कहना है कि उस भयंकर बाढ के दौरान कोई दैविय ताकत पानी में बह रही थी। जब पानी का स्तर कुछ कम हुआ तो एक व्यक्ति ने पेड़ की झाड पर एक बडा सा पत्थर देखा। ऐसा अजीबोगरीब पत्थर उसने

उसने अब तक नहीं देखा था, तो स्वाभाविक उसने उस पत्थर को नीचे उतारा और उसे तोड़ने के लिए जैसे ही उसमें कोई नुकीली वस्तु मारी उस पत्थर में से खून बहने लगा यह देखकर वह वहां से भाग खड़ा हुआ और गाँव वापस लौटकर उसने सब लोगों को यह बात बताई। सभी दोबारा उस स्थान पर पहुँचे जहां वह पत्थर रखा था। सभी उसे देख भौचक्का रह गए। लेकिन उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि आखिर कार इस चमत्कारी पत्थर का क्या करें। इसलिए अंतत: उन्होंने उ गाँव वापस लौटकर अगले दिन फिर आने का फैसला किया। उसी रात गाँव के एक साहूकार के सपने में भगवान शनि आए और बोले " मैं शनि देव हूं, जो पत्थर तुम्हें आज मिला उसे अपने गाव में लाओ और मुझे स्थापित करो।

अगली सुबह होते ही उस साहूकार ने गाँव वालों को सारी बात बताई, जिसके बाद सभी उस पत्थर को उठाने लगे। बहुत से लोगों ने प्रयास किया किंतु वह पत्थर अपनी जगह से एक इंच भी न हिला। काफी देर तक कोशिश करने के बाद गाँव वालों ने यह विचार बनाया कि वापस लौट चलते हैं और कल पत्थर उठाने के लिए नए तरीके के साथ आएंगे। उस रात फिर शनि देव उस साहूकार के सपने में आए और उसे यह बता गए की वह पत्थर कैसे उठाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि " मैं उस स्थान से तभी हिलूंगा

Scanned by TapScanner

अब मुझे जानने वाले लोग सच्चे आत्मा-आंजा दर्शन करने जाएं तो अधिक फायदा होता है। इसके बाद पत्थर को उठाकर एक बड़े से मैदान में सूर्य की रोशनी के तले स्थापित किया गया।

ग्राम शिंगणापुर गाँव के शनि शिंगणापुर मंदिर में यदि आप जाएं तो प्रवेश करने के बाद कुछ आगे चलकर ही आपको खुला मैदान दिखाई देगा। उस मैदान के बीचों-बीच स्थापित हैं शनि देव जी यहां जाने वाले आस्थावान लोग केसरी रंग के वस्त्र पहनकर ही जाते हैं। कहते हैं मंदिर में कथित तौर पर कोई पुजारी नहीं है, भक्त प्रवेश करके शनि देव जी के दर्शन करके सीधा मंदिर से बाहर निकल जाते हैं। रोजाना शनि देवजी की स्थापित मूरत पर सरसों के तेल से अभिषेक किया जाता है कि जो भी भक्त मंदिर के भीतर जाए वह केवल सामने ही देखता है। उसे पीछे से कोई भी भी देखे आवाज लगाए तो मुड़कर देखना नहीं है। शनि देव को माथा टेक कर सीधा-सीधा बाहर आ जाना है, यदि यदि पीछे मुड़कर देखा तो बुरा प्रभाव होता है।

Scanned by TapScanner

Page : 11
Date : / /

* शनि शिंगणापुर मंदिर में 400 साल पुरानी परंपरा टूटी, महिलाओं को मिली घुसने की इजाजत।

शनि शिंगणापुर मंदिर ट्रस्ट ने एलान किया कि वे गुडी पाडवा पर महिलाओं को मंदिर के अंदर दाखिल होने की मंजुरी देंगे। शनि शिंगणापुर मंदिर में बीती कई सदियों से चली आ रही परंपरा टूट गई है। शनि शिंगणापुर मंदिर ट्रस्ट ने शुक्रवार गुडी पाडवा पर महिलाओं को मंदिर के अंदर दाखिल होने की मंजुरी देंगे। इसके बाद, शाम को तृप्ति देसाई की अगुआई में भूमाता ब्रिगेड की सदस्य मंदिर पहुंची। वहां उन्होंने बकायदा पूजा पाठ किया।

शुक्रवार को दोपहर 12 बजे के करीब गांव के 50 से ज्यादा लोग देवस्थान ट्रस्ट के बैनर को धता बताते हुए पवित्र चबुतरे पर चढ गए। इन लोगों ने दूध और तेल से शनि की मुर्ति का स्नान कराया। यह अनुष्ठान गुड़ी पाडवा समेत साल में तीन मौकों पर होता है। गुडी पाडवा को महाराष्ट्र मे नए साल का आगमन मानते हैं। मंदिर के मैनेजर संजय बंकर ने कहा, " हम सिर्फ हाय कोर्ट के फैसले का पालन कर रहे हैं। हम महिलाओं को मंदिर में घूसने की मंजुरी दे रहे हैं।" बता दें कि बाम्बे हायकोर्ट ने पिछले बुधवार को अपने फैसले में कहा था कि महिलाओं को मंदिर में घूसने से नहीं रोका जा

Scanned by TapScanner

जा सकता। भूमाता ब्रिगेड इस मंदिर में महिलाओं की एंट्री कराने की मांग की इसके साथ अभियान चलाया। इसके बाद ही यह मामला सुर्खियों में आया।

मंदिर ट्रस्ट के फैसले का स्वागत करते हुए देसाई ने कहां, "यह महिला शक्ति की जीत है। हम बहुत खुश है, कि हमारी कोशिशे कामयाब रही।" बता दे कि शनि शिंगणापूर मंदिर शनिदेव को समर्पित है, शनिदेव हिंदू मान्यता में शनि ग्रह है। इस मंदिर की सदियों पुरानी परंपरा के अनुसार महिला श्रद्धालुओं को खुले गर्भगृह पर जाने की इजाजत नहीं थी। इस मंदिर में दीवार और छत नहीं है। पावन भाग के रुप में पूजा की जाती है। आंदोलन शुरु होने के बाद मंदिर प्रबंधन ने पिछले दो महिनों में पुरुषो के लिए विशेष पूजा की पद्धति पर रोक लगा दी। अभी तक पुरुष और महिलाएं दोनो ही मूर्ति से समान दूरी पर प्रार्थना करते थे। केवल पुरोहितों को ही गर्भगृह में जाने की इजाजत है। महिलाओं के प्रवेश पर रोक संबंध सदियों पुरानी परंपरा का ~~अ~~ उल्लंघन करते हुए पिछले साल एक महिला ने शनि शिंगणापूर मंदिर में प्रवेश करने और पूजा करने की कोशिश की थी तब से महाराष्ट्र में मंदिरो के गर्भगृह में महिलाओं के प्रवेश के मुद्दे पर बहस तेज हो गयी। इस घटना के बाद मंदिर समिती ने सात

Scanned by TapScanner

सात सुरक्षाकर्मियों को निलंबित कर दिया था और ग्रामीणों ने शुद्धिकरण किया था। उसके बाद देसाई की अगुवाई में भूमाता ब्रिगेड ने शनि मंदिर में भूमाता ब्रिगेड ने शनि मंदिर में इस पाबंदी का उल्लंघन करने के लिए बड़ी नाटकीय घटनाक्रम में अभियान शुरु किया और बैंगिग न्याय के लिए आंदोलन का निश्चय प्रकट किया।

Scanned by TapScanner

दक्षिण में भी हो रहा है हिन्दी का विस्तार

ऐसा माना जाता है कि राजभाषा हिंदी को लेकर दक्षिण राज्यों समेत अन्य गैर हिन्दी भाषी राज्यों में दुर्भावना होता है, लेकिन हकीकत में ऐसा है? हिन्दी दिवस के अवसर पर वेबदुनिया ने यह जानने का प्रयास किया कि आखिर दक्षिण भारत में हिन्दी की स्थिति क्या है और वहाँ के लोग भारत, भारत की राजभाषा को लेकर क्या सोचते हैं? आइए, जानते हैं चार दक्षिण भारतीय राज्यों में हिन्दी की स्थिति के बारे में....

हिन्दी में बात कहना आसान:

कर्नाटक में हिन्दी का बहुत अधिक प्रभाव नजर आता है। आप कहीं भी जाएं यह चाहे सिनेमा हो या सब्जियों का बाजार, मॉल्स हो या रेस्त्रां, टैक्सी बुक करनी हो या फिर कपडे खरीदने हो, सभी स्थानों पर बातचीत हिंदी में होती है। हिन्दी सीखने से अपनी बात कहना अधिक आसान हो जाता है।

यहां आप अधिक लोगों को अंग्रेजी या हिन्दी में बातचीत करते सुन सकते हैं, कन्नड में कम बातचीत सुनाई देती है। एफएम भी इसके अपवाद नहीं हैं। राज्य में मनोरंजन के सबसे बडे साधन मॉल्स है, जहां पर अंग्रेजी, हिन्दी का असर दिखाई देता है।

Scanned by TapScanner

मेरा मानना है कि अपनी संस्कृति को फैलाना होगा ही अच्छा होता है क्योंकि इसी से भाषा का एक पुराना प्रमाण करता है। लेकिन इसके बीच में आपको अपनी पहचान नहीं खोनी चाहिए। बेंगलुरु एक कॉस्मोपॉलिटन शहर है जहाँ पर आपको समूचे देश से आए लोग मिल जाएँगे। अधिक से अधिक भाषाएं सीखना हमेशा ही अच्छा होता है क्योंकि तब ज्यादा लोगों से बातचीत करना सरल हो जाता है।

बेंगलुरु मे पालकगण अपने बच्चो से हमेशा ही ज्यादातर अंग्रेजी या हिन्दी मे बात करते है। जब युवा लोग सार्वजनिक स्थान पर मौज मस्ती कर रहे होते हैं, तब भी हमे हिन्दी या अंग्रेजी ही ज्यादा सुनाई पड़ती है।

कर्नाटक और इसकी भाषा कन्नड़ की एक समृद्ध विरासत, संस्कृति और परंपरा है। इसलिए मेरी विनम्र मत यह है कि वैश्वीकरण को अपनाते समय और अपनी संस्कृति का संरक्षण करने के दौरान एक अच्छा संतुलन बनाकर रखना चाहिए।

तमिलनाडु मे हिन्दी भाषियो की संख्या बढी:-

तमिल भारत की एक ऐतिहासिक भाषा है और तमिल लोग अपनी मातृभाषा को बहुत प्यार करते हैं। जब हिन्दी की बात आती है तो यह देश भर के लोगों के लिए आम बोलचाल की भाषा है। 1960 के दशक मे केंद्र सरकार

सरकार ने तमिलनाडु के स्कुलों के पाठ्यक्रम के स्कुलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को दूसरी भाषा बनाया लेकिन द्रविड मुनेत्र कझगम (डीएमके) इसके बहुत खिलाफ रही है और उसने तब इसका तब बहुत विरोध किया। तब सार्वजनिक विरोध को देखते हुए उस समय इस योजना को रद्द करना पड़ा। पर उन्नीस सौ अस्सी के दशक में निजी स्कुलों में हिंदी को दूसरी भाषा के तौर पर पढाया जाने लगा। उनका कहना था कि जो लोग हिंदी नहीं जानते हैं और तमिलनाडु से बाहर रहते हैं तो उनको बने रहना बहुत मुश्किल होगा। हालांकि तमिलनाडु के राजनीतिक दल हिंदी का विरोध करते हैं लेकिन राज्यों के कुछ भागों में छात्र हिंदी सीखने में रुचि दिखा रहे हैं। क्योंकि शिक्षा पूरी करने के बाद नौकरी की तलाश में जब वे बाहर भारत की ओर जाते हैं तो उन्हें हिंदी न जानने के कारण पड़ता है। ऐसे लोग न तो हिंदी में अपनी बात को ठीक से रख पाते हैं और वे हिंदी समझने में भी असमर्थ होते हैं।

हाल ही में, तमिलनाडु में एक जनमत सर्वेक्षण किया गया कि हिंदी सीखने की क्या जरूरत है? ज्यादातर छात्रों ने तमिल और अंग्रेजी के बाद हिंदी को तीसरी भाषा के तौर पर सीखने में रुचि दिखाई। ऐसे सर्वेक्षणों के आधार पर तमिल छात्रों ने महसुस किया कि आजकल

भाषा मानना बहुत महत्वपूर्ण है। हिन्दी भाषा को लेकर तमिलनाडु में यह धीरे-धीरे बदलाव हुआ है। इसलिए हम उम्मीद करते हैं कि तमिलनाडु के छात्र भी हिन्दी दिवस को मनाएं। इस अवसर उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी खास अवसर या दिन की जरुरत नहीं है।

हिन्दी समृद्ध भाषा, लेकिन....

राजभाषा हिंदी एक बहुत ही समृद्ध भाषा है, लेकिन तेलुगू भाषी राज्य में इसका प्रचार-प्रसार ठीक नहीं है। राज्य के दैनिक कामों में इसके प्रचार, प्रसार और क्रियान्वयन की यही स्थिति है। देश के लोगों में स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान इसकी आश्चर्यजनक सेवा को सम्मान देते हुए हिन्दी दिवस मनाया जा रहा है। आंध्रप्रदेश तेलंगाना राज्यों में 1999 से यह दूसरी भाषा के तौर पर पढाई जा रही है। वर्तमान स्थिती को देखते हुए हिन्दी को सातवीं कक्षा में शुरु किया जाता है सरकारी स्कुलो इसे छठवी कक्षा से ही पढाया जा रहा है। हिन्दी शिक्षण के लिए जो पुस्तकें निर्धारित की गई हैं, उन्हें बहुत ही आकर्षक और प्रभावी बनाया गया है। ताकि सीखने वाला इसे आसानी से सीख ले।

माध्यमिक स्तर पर हिंदी की स्थिति अच्छी है, लेकिन उच्चतर माध्यमिक और स्नातक स्तर पर इसे बडी मुश्किलो का सामना करना पड रहा है। अंग्रेजी

Scanned by TapScanner

के मुकाबले सरकार द्वारा इसे बहुत कम सहायता दी जाती है। इसलिए बहुत सारे लोग गैर-सरकारी संगठन दक्षिणी क्षेत्र में इसे विकसित करने के प्रयास कर रहे हैं. यहाँ लोगों की इसको लेकर जागरूकता कम है। इस क्षेत्र में उदाहरण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद हिन्दी को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सार्वजनिक क्षेत्र में राजभाषा के तौर पर हिन्दी का क्रियान्वयन नाममात्र का है क्योंकि यहाँ जिन अधिकारियों को इसे क्रियान्वित करना है, उनका इस पर जोर ही नही है। विशेषकर बैंको और केन्द्रिय सरकारी कार्यालयों में एक अधिकारी नियुक्त किया जाता है जो कि इसके प्रचार-प्रसार के लिए जिम्मेदार है, लेकिन यह अधिकारी अपने कर्तव्यों के प्रति सतर्क नहीं हैं। तेलुगू भाषी राज्यों में इसकी यही स्थिति है।

मलयाली लोगों की हिन्दी में रुचि;

केरल के लोग हिन्दी के संस्कृति के मामलों में एक स्पष्ट दृष्टिकोण रखते हैं और वे विभिन्न प्रकार की परंपराओं, संस्कृतियों को स्वीकार करने और उन्हें अपनाने में बहुत उदार होते हैं। विभिन्न प्रजातियों के प्रति भी वे ऐसा ही झुकाव महसूस करते हैं। इस कारण से वे विभिन्न भाषाओं को भी प्यार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं। जहाँ तक हिन्दी की बात आती है तो मलयाली हिन्दी को सीखने और बोलने में बहुत रुचि

Scanned by TapScanner

रखते हैं। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों की तरह से केरल में यह विषय कि शैक्षिक पाठ्यक्रमों में अनिवार्य है।

मलयालम सीखना बहुत कठिन होता है। इसलिए दूसरी भाषाओं को सीखने और अपनाने में मलयाली बहुत कम समय लेते हैं। हम बहुतसे केरलवासियों को क्षेत्रीय भाषाओं को बिना किसी अवरोध बोलते सुन सकते हैं। वे तमिलनाडु में तमिल, तेलगु आंध्र और तेलंगाना में तथा कर्नाटक में कन्नड बोल सकते हैं क्योंकि वे जहां जाते हैं, रहते हैं वहां वे स्वयं को स्थानीय भाषा से आसानी से जोड लेते हैं।

14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है और हालांकि तब केरल में त्योहारों का माहौल होता है, तब भी वे इस दिन को विभिन्न तरकों से हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित करके मनाते हैं। बहुत सारे स्कुलों में हिंदी आधारित प्रतियोगिताएँ होती है और केरल हिंदी प्रचारक सभा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। इन कार्यक्रमों के तहत मोबाइल्स में हिंदी बोलने के एप्लीकेशंस, कुछेक जगह में हिंदी में प्रार्थना सभाएं भी आयोजित की जाती है।

Scanned by TapScanner

शनिशिंगणापुर में आने वाले भक्तों को हिंदी बोलने में आने वाली समस्या

यूँ की हमारा विषय शनिशिंगणापुर में आने वाले भक्तों को हिंदी बोलने में क्या समस्या आती है यह है, पर वास्तविकता कुछ अलग है वह कैसे तो बहुत से राज्यों के लोगों को हिंदी बोलनी आती है वह अच्छे से बोल सकते है। शनिशिंगणापुर मे बहुत ऐसे कमिशन एजंट है जिनको शनिशिंगणापुर मे आने वाले भक्तो को हिंदी मे वे अच्छे से शनिदेव के बारे मे, मंदिर के बारे मे समझाते है।

वह कमिशन एजंट उन्हे रहने के लिए निवास स्थान खाना खाने के लिए ट्रस्ट का भोजनालय की सुविधा के बारे बताते है। भक्तो की सुरक्षा का भी व्यवस्थापन शनिशिंगणापुर के ट्रस्ट ने अच्छे से किया है।

शनिशिंगणापुर मे आने वाले बहुत से ऐसे लोग होते है उन्हे हिंदी नहीं आती है। पर कमिशन एजंट उन्हे इसके बारे मे अच्छे से समझाते है। और उन्हें शनिशिंगणापुर के बारे मे अच्छे से माहिती मिलती है।

Scanned by TapScanner

निष्कर्ष

हिंदू धर्म में शनिदेव का एक महत्वपूर्ण स्थान है, निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि शनि शिंगणापुर का वह मंदिर ५०० साल पुराना है उस गाँव के लोग कितनी श्रद्धा के साथ उस पर भरोसा करते हैं कि अपने घरों को अपनी दुकानों को वे दरवाजा भी नहीं लगाते हैं, क्योंकि उनको यह विश्वास है, कि शनिदेव के होते हुए उस पर कोई भी आँच नहीं आ सकती है।

शनिशिंगणापुर के बारे में और कहाँ जाए तो वहाँ पर भक्तों को बहुत ही लूटा जाता है। कमिशन एजेंट के द्वारा उन्हें हर सामान लेते हुए फसाया जाता है, पूजा कि थाली से लेकर सब जगह पर उन्हें फसाया जाता है।

निष्कर्ष तौर पर हमें यह भी मालूम होता है कि भूमाता ब्रिगेड द्वारा शनिशिंगणापुर की ५०० साल पुरानी परंपरा को तोडा गया है। वहाँ के लोगों ने भी स्त्रिया जो कभी शनिदेव को तेल नही चढाती थी जो अब उन्हें यह हक्क भी दिया की वह शनिदेव की पूजा कर सकते है। सब सूप्रिम कोर्ट का सभीने आदर किया और उन्हे यह इजाजत दी कि वह शनिदेव की पूजा कर सकते है।

Scanned by TapScanner